बैपटिस्ट विश्वास और सन्देश

1. पवित्र वचन

पवित्र बाईबल दिव्य प्रेरणा से लिखी गई थी और इसके द्वारा परमेश्वर ने अपने आप को मनुष्य पर प्रकाशित किया है। यह दिव्य निर्देश का सच्चा खज़ाना है। इसका लेखक परमेश्वर है, इसका अन्तिम उद्देश्य और सच्चाई मुक्ति है, और इसके विषय के लिखने में कोई गल्ती नहीं हुई है। इसलिये पूरा पवित्र वचन सच्चा है और विश्वास करने योग्य है। यह वे सिद्धान्त बताता है जिनसे परमेश्वर हमारा न्याय करता है और इसलिये अब से से लेकर सदा तक वह मसीही मिलन का केन्द्र और वह परम मापदण्ड रहेगा जिससे पूरी मानव जाति के व्यवहार, धार्मिक श्रद्धा और विचार को जांचा जायेगा। पूरा पवित्र वचन मसीह की गवाही देता है जो स्वंय दिव्य प्रकाशन का केन्द्र है।

निर्गमन 24:4; व्यवस्थाविवरण 4:1-2;17:19; यहोशु 8:34; भजन संहिता 19:7-10;119:11.89, 105,140; यशायाह 34:16;40:8; यिर्मयाह 15:16;36:1-32; मत्ती 5:17-18;22:29; लूका 21: 33;24:44-46; यूहन्ना 5:39;16:13-15;17:17; प्रेरितों के काम 2:16;17:11; रोमियों 15:4; 16:25-26; 2 तीमुथियुस 3:15-17; इब्रानियों 1:1-2;4-12; 1 पतरस 1:25; 2 पतरस 1:19-21

2. परमेश्वर

सारे संसार के लिये केवल एक वह ही सच्चा परमेश्वर है। वह एक बुद्धिमान, आत्मिक और निजि रिश्ते करने वाला जीव, विधाता, मुक्तिदाता, सुरक्षक और इस संसार का राजा है। परमेश्वर अपनी पवित्रता और दूसरी उत्तमताओं में अनन्त है। परमेश्वर सर्वशक्तिमान और सबसे ज्ञानी है, और उसका उत्तम ज्ञान भूत काल, वर्तमान काल और भविष्य काल तक, जिसमें उसकी उसकी स्वतंत्र सृष्टि के भविष्य में किये जाने वाले काम भी शामिल है, पहुंचता है। हमें उसे सबसे महान प्रेम देना है, उसकी भक्ति करनी है और उसकी आज्ञा माननी है। परमेश्वर हमें अपने आपको अपने शास्वत त्रीमूर्ति के रूप में...पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, जिन का अपना अलग-अलग व्यक्तित्व है, और जिनकी प्रकृति में कोई अन्तर नहीं है, प्रकट करता है।

पिता परमेश्वर

परमेश्वर एक पिता के रूप में अपनी सृष्टि और उसके जीवों का और उस मानव इतिहास का जो उसके उद्देश्य के अनुसार चल रहा है, सावधान रक्षक है। वह सर्वशक्तिमान, सब से ज्ञानी, सब से प्रेम करने वाला और बुद्धिमान है। परमेश्वर सच में उनका पिता बन जाता है जो यीशु मसीह में विश्वास लाकर उसकी सन्तान बनना चाहते हैं। वह पूरी मानव जाति को एक पिता के समान देखता है।

उत्पत्ति 1:1;2:7; निर्गमन 3:14;6:2-3;15:11;20:1; लैव्यव्यवस्था 22:2; व्यवस्थाविवरण 6:4;32:6; इतिहास 29:10; भजन संहिता 19:1-3; यशायाह 43:3,15;64:8; यिर्मयाह 10:10;17:13; मत्ती 6:9;7:11;23:9;28:19; मरकुस 1:9-11; यूहन्ना 4:24;5:26;14:6-13;17:1-8; प्रेरितों के काम 1:7; रोमियों 8:14-15; 1 कुरिन्थियों 8:6; गलतियों 4:6; इफिसियों 4:6; कुलुस्सियों 1:15; 1 तीमुथियुस 1:17; इब्रानियों 11:6;12:9; 1 पतरस 1:17; 1 यूहन्ना 5:7

परमेश्वर एक पुत्र

मसीह परमेश्वर का शास्वत पुत्र है । यीशु मसीह के रूप में वह कुंवारी मरियम से पैदा हुआ । यीशु ने परमेश्वर की इच्छा उत्तमता से प्रकट की और पूरी की । उसने मानव प्रकृति, उस प्रकृति की सारी मांगों और आवश्यकताओं के साथ अपना ली और अपने को पूरा मानव जाति में ढाल लिया, परन्तु बिना किसी पाप के । उसने अपने निजि आज्ञाकारीपन से दिव्य कानून का मान रखा, और मानव जाति के बदले सलीब पर जान देकर उसने मानव जाति को पाप से मुक्त किया । वह महिमापूर्ण देह में मुर्दों में से जिलाया गया, और अपने चेलों को उसी रूप में मिला जो उन्होंने सलीब पर चढ़ाये जाने से पहले देखा था । वह स्वर्ग में उठा लिया गया और अब परमेश्वर के दहिने हाथ पर बैठा है जहां वह परमेश्वर और मानव जाति के बीच रहकर हमारी वकालत करता है और उसके द्वारा उसके व्यक्तित्व में परमेश्वर और मानव जाति के बीच की दूरी समाप्त हो जाती है । वह पूरी शक्ति और महिमा के साथ हमारा न्याय करने और अपना मुक्ति का काम पूरा करने आयेगा । इस समय वह एक विश्वासी के दिल में एक जीते जागते परमेश्वर के रूप में विराजमान है ।

उत्पत्ति 18:1; भजन संहिता 2:7;10:1; यशायाह 7:14;53; मत्ती 1:18-23;3:17;8:29;11:27; 14:33;16:16,27;17:5;27;28:1-6,19; मरकुस 1:1;3:11; लूका 1:35;4:41;22:70; 24:46; यूहन्ना 1:1-18,29;10:30,38;11:25-27;12:44-50;14:7-11;16:15-16,28; 17:1-5,21-22;20:1-20,28; प्रेरितों के काम 1:9;2:22-24;7:55-56;9:4-5,20; रोमियों 1:3-4;3:23-26;5:6-21;8:1-3,34;10:4; 1 कुरिन्थियों 1:30;2:2;8:6;15:1-8,24-28; 2 कुरिन्थियों 5:19-21;8:9; गलतियों 4:4-5; इफिसियों 1:20;3:11;4:7-10; फिलिप्पियों 2:5-11; कुलुस्सियों 1:13-22;2:9; 1 थिस्सलुनीकियों 14:14-18; 1 तीमुथियुस 2:5-6;3:16; तीतुस 2:13-14; इब्रानियों 1:1-3;14-15;7:14-28;9:12-15,24-28;12:2;13:8; 1 पतरस 2:21-25; 1 यूहन्ना 1:7-9;3:2;4:14-15;5:9; 2 यूहन्ना 7-9; प्रकाशितवाक्य 1:13-16;5:9-14;12:10-11;13:8

परमेश्वर एक पवित्र आत्मा

पवित्र आत्मा परमेश्वर की आत्मा है, और उसके समान दिव्य है । इसने प्राचीन समय में रह रहे संतों को पवित्र वचन लिखने की प्रेरणा दी । वह लोगों में ज्ञान जगाकर वह लोगों को सच्चाई समझने में सहायता करता है । वह मसीह को महिमा देता है । वह लोगों को अपने पाप, धार्मिकता और न्याय का अहसास दिलाता है । वह लोगों को मुक्तिदाता की ओर खींचता है और उनका पुनर्जन्म करवाता है । उस पल वह उस विश्वासी को बपतिस्मा देकर मसीह की देह का एक अंग बनाता है । वह लोगों में मसीही चरित्र पैदा करता है, विश्वासियों को आश्वासन देता है, और उन को वे वरदान देता है जिनसे वे अपनी कलीसिया के द्वारा परमेश्वर की सेवा करते हैं । वह विश्वासी को अन्तिम दिन की मुक्ति के लिये पक्का कर देता है । एक मसीही में उसकी उपस्थिति इस बात को दृढ़ करती है कि परमेश्वर उस विश्वासी को मसीह में जिलायेगा । वह विश्वासी और कलीसिया को उनकी आराधना, evangelism और सेवा के लिये ज्ञान और सामर्थ देता है ।

उत्पत्ति 1:2; न्यायियों 14:6; अय्यूब 26:13; भजन संहिता 51:11;139:7; यशायाह 61:1-3; योएल 2:28-32; मत्ती 1:18;3:16;4:1;12:28-32;28:19; मरकुस 1:10,12; लूका 1:35;4:1,18-19;11:13;12:12;24:49; यूहन्ना 4:24;14:16-17,26;15:26;16:7-14; प्रेरितों के काम 1:8; 2:1-4,38;4:31;5:3;6:3;7:55;8:17,39;10:44;13:2;15:28;16:6;19:1-6; रोमियों 8:9-11,14-16,26-27; 1 कुरिन्थियों 2:10-14;3:16;12:3-11,13; गलतियों 4:6; इफिसियों 1:13-

14;4:30;5:18; 1 थिस्सलुनीकियों 5:19; 1 तीमुथियुस 3:16;4:1; 2 तीमुथियुस 1:14;3:16; इब्रानियों 9:8,14; 2 पतरस 1:21; 1 यूहन्ना 4:13;5:6-7; प्रकाशितवाक्य 1:10;22:17

3. मानव

मनुष्य परमेश्वर की एक ख़ास रचना है जिसे उसने अपनी छाया में बनाया है । उसने उन्हें आदमी और औरत के रूप में अपनी सृष्टि की सब से महान रचना बनाया । यह लिंग की देन परमेश्वर की सृष्टि की एक अच्छाई है । आरम्भ में मानव पाप से अन्जान था और उसे उसके विधाता ने चुनाव करने की देन दी थी । अपने चुनाव से मानव ने परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया और पूरी मानव जाति में पाप ले आया । शैतान के धोखे में आकर मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा न मानी और अपनी निर्दोषता खो दी, जिसका परिणाम यह हुआ है कि आने वाली पीढ़ियें पाप की प्रकृति और वातावरण में पाप की ओर झुकती गई हैं । इसीलिये जैसे ही वह नैतिक काम करने के योग्य होता है, मनुष्य हुक्म तोड़ता है और पाप का दोषी बन जाता है । केवल परमेश्वर का अनुग्रह मनुष्य को दोबारा परमेश्वर की पवित्र संगत में ला सकता है जिससे वह परमेश्वर का उद्देश्य पूरा कर सके । मानव जाति की पवित्रता इस बात से ज़ाहिर है कि परमेश्वर ने उसे अपनी छाया में बनाया और इसमें कि मसीह मनुष्य के लिये मारा गया । इसलिये प्रत्येक जाति का प्रत्येक जीवित व्यक्ति पूरे सम्मान और आदर और मसीही प्रेम का अधिकारी है ।

उत्पत्ति 1:26-30;2:5-7,18-22;3;9:6; भजन संहिता 8:3-6;32:1-5;51:5; यशायाह 6:5; यिर्मयाह 17:5; मत्ती 16:26; प्रेरितों के काम 17:26-31; रोमियों 1:19-32;3:10-18;23;5:6, 12,19;6:6;7:14-25;8:14-18,29; 1 कुरिन्थियों 1:21-31;15:19,21-22; इफिसियों 2:1-22; कुलुस्सियों 1:21-22;3:9

4. मुक्ति

मुक्ति पाने का अर्थ है पूरे मनुष्य की ऋणमुक्ति होना । जो भी व्यक्ति यीशु मसीह को, जिसने अपने लहू से प्रत्येक मनुष्य के लिये अनन्त ऋणमुक्ति प्राप्त की, अपना परमेश्वर और उद्धारकर्ता स्वीकार करता है, उसे यह खुलेआम मिलती है । अपनी सम्पूर्णता में मुक्ति का अर्थ है पुर्नजन्म, समर्थन, पवित्रकरण और महिमागान । यीशु मसीह को परमेश्वर स्वीकार किये बिना कोई मुक्ति नहीं है ।

- **पुनर्जन्म**

  पुनर्जन्म या नया जन्म परमेश्वर के अनुग्रह से मिलता है जिससे विश्वासी यीशु मसीह में नये जीव बन जाते हैं । इसे पवित्र आत्मा के द्वारा हमें पापों का अहसास दिलाकर हमारे दिल के बदल जाने को कहते हैं जिसमें पापी परमेश्वर के सामने अपने पापों से पश्चाताप करता है और यीशु मसीह में विश्वास लाता है । पश्चाताप और विश्वास अनुग्रह के अटल अनुभव हैं ।

  पश्चाताप करने का अर्थ है कि सचमुच में अपने पापों से मुड़कर परमेश्वर की दिशा में जाना । विश्वास का अर्थ है कि हम यीशु मसीह को स्वीकार करते हैं और अपने पूरे व्यक्तित्व से उसे परमेश्वर और मुक्तिदाता स्वीकार करते हैं ।

- **समर्थन**

  समर्थन का अर्थ है कि परमेश्वर उन सब पापियों को जो परमेश्वर की पवित्रता के सिद्धान्तों के अनुसार पश्चाताप करते हैं, उनका अपने अनुग्रह के साथ, उनके पापों से पूरा छुटकारा दिला देता है । समर्थन एक विश्वासी को परमेश्वर के साथ शांति और कृपा के रिश्ते में ले आता है ।

- **पवित्रकरण**

  पवित्रकरण का अनुभव वह है जो पुनर्जन्म से आरम्भ होता है और जिस के द्वारा विश्वासी को परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिये उसके पापों से अलग किया जाता है। जो पवित्र आत्मा उस विश्वासी में विराजती है उसके बल पर वह एक नैतिक और आत्मिक बढ़प्पन की ओर बढ़ता है। एक पुनर्जन्म लिये व्यक्ति के जीवन को परमेश्वर के अनुग्रह में विकास करते रहना चाहिये।

- **महिमागान**

  महिमागान करना मुक्ति पाने का फल है और एक पापों से बचाये गये व्यक्ति के जीवन की अन्तिम और स्थिर अवस्था है।

  उत्पत्ति 3:15; निर्गमन 3:14-17;6:2-8; मत्ती 1:21;4:17;16:21-26;27:22-28:6; लूका 1:68-69;2:28-32; यूहन्ना 1:1:11-14,29;3:3-21,36;5:24;10:9,28-29;15:1-16;17:17; प्रेरितों के काम 2:21;4:12;15:11;16:30-31;17:30-31;20:32; रोमियों 1:16-18;2:4;3:23-25;4:3;5:8-10;6:1-23;8:1-18,29-39;10:9-10,13:13:11-14; 1 कुरिन्थियों 1:18,30;6:19-20;15:10; 2 कुरिन्थियों 5:17-20; गलतियों 2:20;3:13;5:22-25;6:15; इफिसियों 1:7;2:8-22;4:11-16; फिलिप्पियों 2:12-13; कुलुस्सियों 1:9-22;3:1; 1 थिस्सलुनीकियों 5:23-24; 2 तीमुथियुस 1:12; तीतुस 2:11-14; इब्रानियों 2:1-3;5:8-9;9:24-28;11:1-12:8,14; याकूब 2:14-26; 1 पतरस 1:2-23; 1 यूहन्ना 1:6-2:11; प्रकाशितवाक्य 3:20;21:1-22:5

5. परमेश्वर का अनुग्रह करने का उद्देश्य

चुनाव करना परमेश्वर के अनुग्रह करने का उद्देश्य है जिसकी वजह से वह पुनर्जन्म, समर्थन, पवित्रकरण और महिमागान करता है। परमेश्वर का अनुग्रह मानव की स्वतंत्रता के अनुकूल है और उस अन्त के लिये सभी मार्ग जानता है। वह परमेश्वर की प्रभुसत्ता की अच्छाई का महान प्रकटन है और अनन्त बद्धिमान, पवित्र और उसमें कोई परिवर्तन नहीं आता। वह घमण्ड नहीं करता, बल्कि नम्रता से पेश आने की प्रेरणा देता है।

सभी सच्चे विश्वासी शास्वत काल तक सिद्ध रहते हैं। जिन लोगों को परमेश्वर ने मसीह में अपनाया है और अपनी आत्मा से पवित्र किया है, वह उसके अनुग्रह से कभी दूर नहीं होते, परन्तु अन्त तक स्थिर रहेंगे। चाहे विश्वासी अनजाने में या लालच में आकर पाप कर बैठें और पवित्र आत्मा को दुख पहुंचायें, अपने अनुग्रह और आराम को ठुकरायें, मसीह के उद्देश्य का तिरस्कार करें और अपने ऊपर सांसारिक न्याय करवायें, परन्तु तब भी वे परमेश्वर की शक्ति और विश्वास के द्वारा मुक्ति में बने रहेंगे।

उत्पत्ति 12:3; निर्गमन 19:5-8; 1 शमूएल 8:4-7,19-22; यशायाह 5:1-7; यिर्मयाह 31:31; मत्ती 16:18-19;21:28-45;24:22,31;25:34; लूका 1:68-79;2:29-32;19:41-44;24:44-48; यूहन्ना 1:12-14;3:16;5:24;6:44-45,65;10:27-29;15:16;17:6,12,17-18; प्रेरितों के काम 20:32; रोमियों 5:9-10;8:28-39;10:12-15;11:5-7,26-36; 1 कुरिन्थियों 1:1-2;15:24-28; इफिसियों 1:4-23;2:1-10;3:1-11; कुलुस्सियों 1:12-14; 2 थिस्सलुनीकियों 2:13-14; 2 तीमुथियुस 1:12;2:10,19; इब्रानियों 11:39-12:2; याकूब 1:12; 1 पतरस 1:2-5,13;2:4-10; 1 यूहन्ना 1:7-9;2:19;3:2

6. कलीसिया

एक नये नियम की कलीसिया परमेश्वर यीशु मसीह के अधीन, स्थानिय बपतिस्मा लिये विश्वासियों का संगठन

है जो विश्वास और सुसमाचार के वचन की संगत में एक हैं। कलीसिया मसीह के दो निर्देश मानती है, उसके कानून पर चलती है, उसके वचन के द्वारा दी गई देनों, अधिकार और सुविधाओं का प्रयोग करती हैं और सुसमाचार को धरती के अन्त तक ले जाना चाहती हैं। प्रत्येक कलीसिया मसीह को प्रभुसत्ता में जनतंत्र के क्रम से काम करती है। ऐसी कलीसिया में प्रत्येक सदस्य अपने लिये स्वंय ज़िम्मेदार है और मसीह का उत्तरदायी है। इस कलीसिया के आत्मिक लीडर पादरी और कलीसिया के बड़े (deacons) हैं। चाहे दोनों आदमियों और औरतों को सेवा करने की देन दी गई है, परन्तु पवित्र वचन के अनुसार केवल आदमी ही पादरी बन सकते हैं।

नया नियम कलीसिया को मसीह की देह भी कहता है जिसमें हर उम्रवाला, हर कबीलेवाला, हर भाषा का बोलनेवाला, हर जाति और देश का विश्वासी शामिल है।

मत्ती 16:5-19;18:15-20; प्रेरितों के काम 2:41-42,47;5:11-14;6:3-6;13:1-3;14:23,27; 15:1-30;16:5;20:28; रोमियों 1:7; 1 कुरिन्थियों 1:2;3:16;5:4-5;7:17;9:13-14;12; इफिसियों 1:22-23;2:19-22;3:8-11,21;5:22-32; फिलिप्पियों 1:1; कुलुस्सियों 1:18; 2 तीमुथियुस 2:9-14;3:1-15;4:14; इब्रानियों 11:39-40; 1 पतरस 5:1-4; प्रकाशितवाक्य 2-3; 21:2-3

7. बपतिस्मा और प्रभु भोज (the Lord's Supper)

एक मसीही बपतिस्मा लेने का अर्थ है कि पिता परमेश्वर, उसके पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से पानी में डुबकी लगाना। इस आज्ञा को मानना वह नियम है जो विश्वासी के एक सलीब पर चढ़ाये गये, दफ़नाये गये और फिर जी उठने वाले मुक्तिदाता में विश्वास रखने का प्रतीक है। यह विश्वासी की पाप की ओर मृत्यु, पुराने जीवन को दफ़नाने और यीशु मसीह में एक नये जीवन में जी उठने का प्रतीक भी है। यह उस विश्वासी की गवाही है कि संसार के अन्त में सारे मरे हुये लोगों को जिलाया जायेगा। बपतिस्मा लेना एक कलीसिया का सदस्य होने की सुविधा और प्रभु भोज में भाग लेने की मांग है।

प्रभु भोज लेना भी वह आज्ञा मानने का प्रतीक है जिसमें कलीसिया के सदस्य रोटी तोड़कर और कटोरे से पी कर अपने मुक्तिदाता की मृत्यु को याद करते हैं और उसके आने का इन्तज़ार करते हैं।

मत्ती 3:13-17;26-30;28:19-20; मरकुस 1:9-11;14:22-26; लूका 3:21-22;22:19-20; यूहन्ना 3:23; प्रेरितों के काम 2:41-42;8:35-39;16:30-33;20:7; रोमियों 6:3-5; 1 कुरिन्थियों 10:16,21;11:23-29; कुलुस्सियों 2:12

8. प्रभु का दिन

सप्ताह का पहला दिन परमेश्वर का दिन है। यह एक मसीही रिवाज है जो सदा माना जाना चाहिये। यह मसीह के मुर्दों में से जी उठने का प्रतीक है और इस दिन केवल आराधना और आत्मिक भक्ति की जानी चाहिये, वह चाहे अकेले में की जाये या दूसरों के साथ मिलकर। परमेश्वर के दिन किये गये काम मसीही विवेक के अनुकूल और यीशु मसीह की प्रभुसत्ता में होने चाहिये।

निर्गमन 20:8-11; मत्ती 12:1-12;28:1; मरकुस 2:27;16:1-7; लूका 24:1-3,33-36; यूहन्ना 14:21-24;20:1,19-28; प्रेरितों के काम 20:7; रोमियों 14:5-10; 1 कुरिन्थियों 16:1-2; कुलुस्सियों 2:16;3:16; प्रकाशितवाक्य 1:10

9. परमेश्वर का राज्य

परमेश्वर का राज वैसे तो उसके पूरे संसार पर है पर ख़ासकर मानव जाति पर जो उसे अपनी इच्छा से राजा मानती है । परमेश्वर का राज मुक्ति लेने का वह स्थान है जहां लोग विश्वास से भरे, बच्चों के समान, यीशु मसीह के पीछे चलते हैं । मसीहियों को प्रार्थना करनी चाहिये और ऐसे काम करने चाहिये जिनसे परमेश्वर का राज आये और उसकी इच्छा पूरी हो । परमेश्वर के राज की पूर्णता यीशु मसीह के आने और इस समय के अन्त से होगी ।

उत्पत्ति 1:1; यशायाह 9:6-7; यिर्मयाह 23:5-6; मत्ती 3:2;4:8-10,23;12:25-28;13:1-52;25:31-46;26:29; मरकुस 1:14-15;9:1; लूका 4:43;8:1;9:2;12:31-32;17:20-21;23:42; यूहन्ना 3:3;18:36; प्रेरितों के काम 1:6-7;17:22-31; रोमियों 5:17;8:19; 1 कुरिन्थियों 15:24-28; कुलुस्सियों 1:13; इब्रानियों 11:10,16;12:28; 1 पतरस 2:4-10;4:13; प्रकाशितवाक्य 1:6,9;5:10;11:15;21-22

10.अन्तिम दिनों की बातें

परमेश्वर अपने समय और अपने तरीके से इस संसार का उचित तौर से अन्त करेगा । उसके वचन के अनुसार, यीशु मसीह अपनी पूरी महिमा में सबके सामने इस धरती पर लौटेगा, मुर्दे जी उठेंगे और मसीह सबका न्याय करेगा । अपवित्र लोगों को नर्क में भेजा जायेगा जो कि अनन्त दण्ड का स्थान है । पवित्र लोग अपनी पुनर्जीवित और महिमा से भरी देह में अपना उपहार पायेंगे और सदा परमेश्वर के साथ स्वर्ग में रहेंगे ।

यशायाह 2:4;11:9; मत्ती 16:27;18:8-9;19:28;24:27,30,36,44;25:31-46;26:64; मरकुस 8:38;9:43-48; लूका 12:40,48;16:19-26;17:22-37;21:27-28; यूहन्ना 14:1-3; प्रेरितों के काम 1:11;17:31; रोमियों 14:10; 1 कुरिन्थियों 4:5;15:24-28,35-58; 2 कुरिन्थियों 5:10; फिलिप्पियों 3:20-21; कुलुस्सियों 1:5;3:4; 1 थिस्सलुनीकियों 4:14-18;5:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7; 1 तीमुथियुस 6:14; 2 तीमुथियुस 4:1,8; तीतुस 2:13; इब्रानियों 9:27-28; याकूब 5:8; 2 पतरस 3:7; 1 यूहन्ना 2:28;3:2; यहूदा 14; प्रकाशितवाक्य 1:18;3:11;20:1-22:13

11.Evangelism और मिशन के काम

यह मसीह के प्रत्येक अनुयायी और परमेश्वर यीशु मसीह की प्रत्येक कलीसिया का धर्म है कि सब देशों में जाकर लोगों को मसीह का अनुयायी बनायें । परमेश्वर की पवित्र आत्मा से जन्म लेने का अर्थ है कि हमारे दिलों में दूसरों के लिये प्रेम का जन्म हो । इसलिये हम सबके लिये मिशनरी का काम करना एक पुनर्जन्म लेने की आत्मिक आवश्यकता है, और मसीह की शिक्षाओं में बार-बार और साफ़-साफ़ बताई गई है । परमेश्वर यीशु मसीह ने सुसमाचार सुनाने की आज्ञा हम सबको दी है । यह परमेश्वर की प्रत्येक सन्तान की ज़िम्मेदारी है कि एक मसीही जीवन पर आधारित, गवाही देकर भटके हुये लोगों को मसीह के लिये जीतें और या फिर किसी ऐसे तरीके से जो मसीह के सुसमाचार के अनुकूल है ।

उत्पत्ति 12:1-3; निर्गमन 19:5-6; यशायाह 6:1-8; मत्ती 9:37-38;10:5-15;13:18-30,37-43;16:19;22:9-10;24:14;28:18-20; लूका 10:1-18;24:46-53; यूहन्ना 14:11-12;15:7-8,16;17:15;20:21; प्रेरितों के काम 1:8;2:26-40;10:42-48;13:2-3; रोमियों 10:13-15; इफिसियों 3:1-11; 1 थिस्सलुनीकियों 1:8;2;8:26-40; 2 तीमुथियुस 4:5; इब्रानियों 2:1-3;11:39-12:2; 1 पतरस 2:4-10; प्रकाशितवाक्य 22:17

12.शिक्षा

मसीही होना एक प्रबुद्ध होने और ज्ञान प्राप्त करने वाला विश्वास है। यीशु मसीह में हर बुद्धिमता और ज्ञान का खज़ाना है। इसलिये सारी उचित शिक्षा मसीही होने की पैतृक सम्पत्ति है। नया जीवन सारी मानव मनोशक्तियें जगा देता है और ज्ञान की भूख को जन्म देता है। मसीह के राज्य में शिक्षा प्राप्त करने का सबसे पहला उद्देश्य है कि वह मिशन के कामों और आम उदारता के कारणों को एक करे। इसके लिये पूरी कलीसिया की भरपूर सहायता चाहिये। मसीह के लोगों के लिये एक उचित मसीही शिक्षा के कार्यक्रम को पूरा करना बहुत ज़रूरी है।

एक मसीही शिक्षा में शास्त्रीय स्वतंत्रता और शास्त्रीय ज़िम्मेदारी के बीच एक संतुलन होना चाहिये। मानव जीवन के किसी भी रिश्ते में स्वतंत्रता सदा संकुचित होती है, परन्तु कभी असीम नहीं होती। एक मसीही विद्यालय या सैमिनरी में शिक्षक की स्वतंत्रता को यीशु की श्रेष्ठता, पवित्र वचन के अधिकार और विद्यालय के मुख्य उद्देश्य ही संकुचित करते हैं।

व्यवस्थाविवरण 4:1,5,9,14;6:1-10;31:12-13; यिर्मयाह 8:1-8; अय्यूब 28:28; भजन संहिता 19:7;119:11; नीतिवचन 3:13;4:1-10;8:1-7,11;15:14; सभोपदेशक 7:19; मत्ती 5:2; 7:24;28:19-20; लूका 2:40; 1 कुरिन्थियों 1:18-31; इफिसियों 4:11-16; फिलिप्पियों 4:8; कुलुस्सियों 2:3,8-9; 1 तीमुथियुस 1:3-7; 1 तीमुथियुस 1:3-7; 2 तीमुथियुस 2:15;3:14-17; इब्रानियों 5:12-6:3; याकूब 1:5;3:17

13.सेवा करना और दान देना

परमेश्वर सारी सांसारिक और आत्मिक बरकतों का दाता है। जो भी हमारे पास है, हम उसके लिये परमेश्वर के कर्ज़दार हैं। मसीहियों का संसार की ओर एक आत्मिक कर्ज़ा है, वे सुसमाचार के एक पवित्र प्रबन्धक हैं और उनका अपनी सम्पत्ति के साथ एक सेवक वाला बन्धन है। इसलिये अपने समय, कुशलता और सम्पत्ति के साथ उन्हें उस परमेश्वर की सेवा करनी चाहिये क्योंकि ये सब उन्हें परमेश्वर की महिमा और दूसरों की सेवा करने के लिये सौंपा गया है। पवित्र वचन के अनुसार मसीहियों को मुक्तिदाता के इस धरती पर उद्देश्य के लिये अपने सारे साधन खुशी-खुशी, लगातार, क्रम से, बराबर और खुलकर बांटने चाहिये।

उत्पत्ति 14:20; लैव्यव्यवस्था 27:30-32; व्यवस्थाविवरण 8:18; मलाकी 3:8-12; मत्ती 6:1-4,19-21;19:21;23:23;25:14-29; लूका 12:16-21,42;16:1-13; प्रेरितों के काम 2:44-47;5:1-11;17:24-25;20:35; रोमियों 6:6-22;12:1-2; 1 कुरिन्थियों 4:1-2;6:19-20;12;16:1-4; 2 कुरिन्थियों 8-9; फिलिप्पियों 4:10-19; 1 पतरस 1:18-19

14.सहयोग

मसीही लोगों को समय के अनुसार बार-बार ऐसे संगठन और सम्मेलन करने चाहिये जिनसे वे लोगों से परमेश्वर के राज्य के लिये ज़्यादा से ज़्यादा सहयोग पा सकें। ऐसे संगठनों का एक दूसरे या किसी कलीसिया पर कोई अधिकार नहीं होता। लोग इन संस्थाओं को अपनी इच्छा से सथापित करते हैं और उनका काम हमारे लोगों की स्फूर्ति को प्रकाश में लाना, लोगों को एकत्रित करना और सबसे प्रभावशाली रूप में उनका उपयोग करना है। नये नियम के अनुसार स्थापित की गई कलीसिया के सदस्यों को मिशनरी का काम, शिक्षा और उदारता की मिनिस्ट्रियों में एक दूसरे का सहायक होना चाहिये ताकि मसीह का राज्य फैले। नये नियम में मसीही एकता का अर्थ है कि मसीही लोगों के भिन्न-भिन्न समुदाय, अपनी इच्छा और आत्मिक मेल से, एक

जैसे कामों में एक दूसरे का साथ दें। जब ऐसे कामों का फल एक है तो भिन्न-भिन्न denominations को एक दूसरे की सहायता करनी चाहिये, और ख़ासकर इसलिये कि ऐसी सहायता करने से नये नियम में दिये गये परमेश्वर के वचन को कोई ठेस नहीं पहुंचती और न ही मसीह की ओर हमारे फ़र्ज़ में कोई कमी आती है।

निर्गमन 17:12;18:17; न्यायियों 7:21; एज़्रा 1:3-4;2:68-69; नहेम्याह 4;8:1-5; मत्ती 10:5-15;20:1-16;22:1-10;28:19-20; मरकुस 2:3; लूका 10:1; प्रेरितों के काम 1:13-14;2:1;4:31-37;13:2-3;15:1-35; 1 कुरिन्थियों 1:10-17;3:5-15;12; 2 कुरिन्थियों 8-9; गलतियों 1:6-10; इफिसियों 4:1-16; फिलिप्पियों 1:15-18

15.एक मसीही और उसका समाज

यह सभी मसीहियों का कर्तव्य है कि वे अपने जीवन और मानव समाज में मसीह की इच्छा को प्रथम मानें। समाज के विकास और लोगों में पवित्रता स्थापित करने के लिये जो भी साधन और विधियें प्रयोग की जाती हैं, वे तभी सच्ची और सदा सहायक होंगी जब वे यीशु मसीह के अनुग्रह के द्वारा इन्सान के पुनर्जन्म में स्थिर रहें। मसीह की आत्मा में, मसीहियों को जातपात, हर प्रकार के लालच, स्वार्थीपन और बुरी आदतों और हर प्रकार के अनैतिक सम्बन्धों का (जिसमें व्यभिचार, पुरूषगामी होना या स्त्रिगामी होना और गन्दी तस्वीरों में शौक रखना शामिल हैं) विरोध करना चाहिये। हमें अनाथों, ज़रूरतमन्द और दुरूपयोग किये गये लोगों, बड़े बूढ़ों, बेसहारा और बीमार लोगों की सहायता के लिये काम करना चाहिये। हमें गर्भ में बढ़ रहे बच्चों और गर्भधारण से प्राकृतिक मृत्यु तक मानव जीवन की पवित्रता के हक़ में बोलना चाहिये। हर मसीही को उद्योग, सरकार और समाज को पवित्रता, सच्चाई और भाईचारे के सिद्धान्तों पर डालने के लिये काम करना चाहिये। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिये मसीहियों को किसी भी अच्छे काम में अच्छी नीयत वाले लोगों के साथ काम करने के लिये तैयार रहना चाहिये। बस सदा यह ध्यान रखें कि प्रेम की आत्मा में काम करते समय हम अपनी मसीह की ओर भक्ति और उसके सत्य का समझौता न करें।

निर्गमन 20:3-17; लैव्यव्यवस्था 6:2-5; व्यवस्थाविवरण 10:12;27:17; भजन संहिता 101:5; मीका 6:8; जकर्याह 8:16; मत्ती 1:29-34;2:3;10:21; लूका 4:18-21;10:27-37;20:25; यूहन्ना 15:12;17:15; रोमियों 12-14; 1 कुरिन्थियों 5:9-10;6:1-7;7:20-24;10:23-11:1; गलतियों 3:26-28; इफिसियों 6:5-9; कुलुस्सियों 3:12-17; 1 थिस्सलुनीकियों 3:12; फिलेमोन; याकूब 1:27; 2:8

16.शांति और लड़ाई

यह प्रत्येक मसीह का धर्म है कि पवित्रता के सिद्धान्त पर हर मनुष्य के साथ शांति बनाये रखे। मसीह की अ आत्मा और शिक्षाओं के अनुसार उन्हें लड़ाई समाप्त करने के लिये कुछ भी करना चाहिये।

लड़ाई को समाप्त करने की सच्ची विधि परमेश्वर का सुसमाचार है। इस संसार की सबसे महान आवश्यकता है कि लोगों और देशों के प्रत्येक काम में उसकी शिक्षा को अपनायें और उसके प्रेम के कानून को लागू करें। सारे संसार के मसीही लोगों को संसार भर में शांति के राजकुमार के राज्य के लिये प्रार्थना करनी चाहिये।

यशायाह 2:4; मत्ती 5:9,38-48;6:33;26:52; लूका 22:36,38; रोमियों 12:18-19;13:1-7;14:19; इब्रानियों 12:14; याकूब 4:1-2

17.धार्मिक स्वतंत्रता

हमारे अंतकरण का स्वामी केवल परमेश्वर है और उसने इसे लोगों की उन शिक्षाओं और आज्ञाओं से वंचित रखा है जो परमेश्वर के वचन के विरूद्ध होती हैं या फिर उस वचन में कहीं नहीं पाई जाती। कलीसिया और सरकार सदा अलग-अलग होने चाहिये। सरकार का यह फ़र्ज़ है कि वह कलीसिया की अपनी आत्मिक आवश्यकतायें पूरी करने के कामों में रक्षा करे और उसे ऐसा करने की स्वतंत्रता दे। ऐसी स्वतंत्रता देने में किसी भी धार्मिक संगठन को एक दूसरे से ज़्यादा पक्ष नहीं मिलना चाहिये, क्योंकि नागरिक सरकार परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बनाई गई है। यह प्रत्येक मसीही का धर्म है कि जो भी चीज़ परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध नहीं है उसे पूरी तरह माने। कलीसिया को अपना काम करने के लिये नागरिक शक्ति का प्रयोग नहीं करना चाहिये। मसीह का सुसमाचार अपना काम करने के साधन स्वंय बनाता है। सरकार लोगों को अपना धार्मिक विचार व्यक्त करने के लिये दण्ड नहीं दे सकती। सरकार किसी एक धर्म की सहायता करने के लिये लोगों पर कर नहीं लगा सकती। मसीही आदर्श यह है कि एक स्वतंत्र देश में स्वतंत्र कलीसिया हो और इसका मतलब है कि हर व्यक्ति परमेश्वर के पास बिना किसी रूकावट के आने का हक़ रखता है और वह धर्म के दायरे में अपने विचार नागरिक शक्ति के विघ्न डाले बिना प्रगट कर सकता है।

उत्पत्ति 1:27;2:7; मत्ती 6:6-7;16:26;22:21; यूहन्ना 8:36; प्रेरितों के काम 4:19-20; रोमियों 6:1-2;13:1-7; गलतियों 5:1,13; फिलिप्पियों 3:20; 1 तीमुथियुस 2:1-2; याकूब 4:12; 1 पतरस 2:12-17;3:11-17;4:12-19

18.परिवार

परमेश्वर ने मानव समाज की नींव परिवार पर रखी है। यह उन लोगों से बनता है जो आपस में विवाह, लहू और गोद लेने के रिश्तों से जुड़े होते हैं।

विवाह एक आदमी और एक औरत का जीवनभर के लिये साथ रहने की प्रतिज्ञा लेकर एक होने का नाम है। यह परमेश्वर की मसीह और उसकी कलीसिया की एकता प्रगट करने का अदभुत उपहार है और आदमी और औरत के लिये विवाह का बन्धन एक गहरे रिश्ते को बनाने, बाईबल के अनुसार एक होने और सन्तान उत्पन्न करने का साधन है।

परमेश्वर के सामने पति और पत्नी एक समान हैं क्योंकि दोनों परमेश्वर की छाया में बने हैं। विवाह रिश्तों का वह नमूना दिखाता है जिस तरह परमेश्वर अपने लोगों से मिलता है। एक पति को अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करना है जैसे कि मसीह ने अपनी कलीसिया से किया। उसे परमेश्वर ने परिवार को पालने, उसकी रक्षा करने और अपने परिवार का मार्ग दर्शन करने की ज़िम्मेदारी दी है। एक पत्नी को अपने पति के आगे उसी नम्रता से झुकना है जैसे एक कलीसिया मसीह की प्रधानता के आगे झुकती है। पत्नी भी अपने पति की तरह परमेश्वर की छाया में बनी होने के कारण उसके बराबर है और उसे परमेश्वर ने पति का आदर करने और घर की देखभाल करने और बच्चे पालने में अपने पति की सहायता करने की ज़िम्मेदारी दी है।

बच्चे तो गर्भधारण के समय से ही परमेश्वर की ओर से एक बरकत और पैतृक सम्पत्ति की तरह होते हैं। माता-पिता को अपने बच्चों को, परमेश्वर के अनुसार विवाह का रूप, दिखाना चाहिये। माता-पिता को अपने बच्चों को अविचल जीवन के उदाहरण, प्रेम से भरे अनुशासन और बाईबल पर आधारित काम करके आत्मिक और नैतिक महत्त्व सिखाना और उनका मार्ग दर्शन करना चाहिये। बच्चों को अपने माता-पिता का आदर करना है और उनकी आज्ञा माननी है।

उत्पत्ति 1:26-28;2:15-25;3:1-20; निर्गमन 20:12; व्यवस्थाविवरण 6:4-9; यहोशू 24:15; 1 शमूएल 1:26-28; भजन संहिता 51:5;78:1-8;127;128;139:13-16; नीतिवचन 1:8;5:15-20;6:20-22;12:4;13:24;14:1;17:6;18:22;22:6,15;23:13-14;24:3;29:15,17;

31:10-31; सभोपदेशक 4:9-12;9:9; मलाकी 2:14-16; मत्ती 5:31-32;18:2-5;19:3-9; मरकुस 10:6-12; रोमियों 1:18-32; 1 कुरिन्थियों 7:1-16; इफिसियों 5:21-33;6:1-4; कुलुस्सियों 3:18-21; 1 तीमुथियुस 5:8,14; 2 तीमुथियुस 1:3-5; तीतुस 2:3-5; इब्रानियों 13:4; 1 पतरस 3:1-7